× × × × ×

Question-3 कैसवहो कथा की समीक्षा करें?

Ans— प्रस्तुत खण्ड काव्य कथा के रचयिता रामपाणिवाद है। कैसवहो कथा यह श्रीमद्भागवत पर आधृत है और कथा वस्तु कृष्ण के व्रज से मथुरा की ओर प्रस्थान से आरम्भ होती है, अन्तिम सर्ग में अक्रूर के मूल से कवि रामपाणिवाद ने कृष्ण का पूर्ववृत्त वर्णन कराकर उसे एक प्रकार से कृष्ण का कंस वध तक का पूर्ण जीवन चरित बना दिया है। इस रचना में कवि पर कालिदास, भारवि और माघ आदि संस्कृत के महाकवियों का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है। अक्रूर का आगमन स्वागत और स्तुति हमें किरातार्जुनीयम में किरात के साथ तथा "शिशुपालवध" में नारद के वृतान्त का स्मरण कराते हैं। द्वितीय सर्ग के आदि में वैतालिकों द्वारा प्रभात का वर्णन शिशुपालवध के प्रभात वर्णन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। रघुवंश के पाँचवें सर्ग में अज के उद्बोधन के लिए किए गये

बन्दि जनों के पाठ से भी अनुप्राणित प्रतीत होता है, क्योंकि कृष्ण वहाँ मथुरा अधिपति नहीं है, बल्कि गोप समुदाय के साथ एक जननायक के रूप में ही गये थे। यह काव्य की दृष्टि से कृष्ण को बन्दियों द्वारा न जगाकर कंस को बन्दियों द्वारा जगाया जाना चाहिए था। यतः अधिपति का वैतालिकों द्वारा उद्बोधन करना ही काव्य का औचित्य है। एक बात और खटकनेवाली है कि जिस प्रमुख घटना के आधार पर इस काव्य का नामकरण किया गया है उस प्रमुख घटना का का विस्तार से वर्णन नहीं हुआ है कवि ने वध एक पद्य में ही चलता वर्णन कर दिया है। इसकी अपेक्षा तो धोबी और चाणूर आदि मल्लों का वध अधिक विस्तार के साथ वर्णित है तथा यह वीरोचित भी नहीं है पर कंस के वध के निरूपण में वीररस का परिपाक नहीं हो पाया है उद्दीपन और आलम्बन आदि भाव-विभावों को उद्दीपन होने का अवसर ही नहीं मिला है। अतः प्रमुख घटना का वर्णन-शैथिल्य इस काव्य का बड़ा दोष है। इतना होने पर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि कथावस्तु का केन्द्र कंसवध की घटना है। समस्त कथावस्तु इसी केन्द्र बिन्दु के चारों ओर चक्कर लगाती है। अतः प्रधान घटना के आधार पर काव्य के नामकरण का औचित्य सिद्ध हो जाता है। भाषा भाव और शैली की दृष्टि से भी यह एक सफल खण्डकाव्य है। आश्चर्य है कि इस काव्य में प्राकृत के सर्वप्रमुख गाथा छन्द का प्रयोग नहीं हुआ है। काव्योचित अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। कवि की कल्पनाएँ हृदय ग्राही और मार्मिक है।

Scanned with CamScanner